[प्रकाश करात की प्रतिष्ठा दांव पर]

प्रकाश कारत की प्रतिष्ठा दांव पर

जनादेश

प्रभात कुमार रॉय

अपनी स्थापना के वर्ष 1964 के पश्चात मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीएम) इस वक्त सबसे चुनौतीपूर्ण दौर से गुजर रही है। मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के दो ताकतवर गढ़ों बंगाल और केरल में विधानसभा के चुनाव हो रहे हैं, जहां वह सत्तानशीन पार्टी है। बंगाल प्रांत में तो सीपीएम मुसलसल तौर पर 34 वर्ष तक सत्तानशीन रहकर लोकतांत्रिक दुनिया में शानदार रिकार्ड स्थापित कर ही चुकी है। केरल के लोकतांत्रिक चुनावों में भी सीपीएम का रिपोर्ट कार्ड काफी अच्छा रहा है। केरल आजाद भारत का प्रथम राज्य रहा, जहां 1957 के आम चुनाव में कम्युनिस्टों ने कांग्रेस को पराजित करके अपना परचम लहराया था।

केरल के कम्युनिस्ट तो शानदार राजनीतिक संतुलन के कारण अहंकार और भ्रष्टता से साफ बच गए किंतु एब्सोल्यूट पोलीटिकल पावर का भोग करने वाले बंगाल के कम्युनिस्ट आखिरकार इस सार्वभौमिक सत्योक्ति से कैसे अछूते रह सकते थे। सीपीएम अत्यंत अनुशासित और ईमानदार कैडर बेस पार्टी मानी जाती है, किंतु 34 वर्षों के निर्बाध शासन ने राजसत्ता के अहंकार ने इसके लीडरों और कार्यकर्ताओं को दिग्भ्रमित कर दिया। बंगाल का नंदीग्राम और सिंगुर इलाके के लाखों किसान बुद्धदेब भट्टाचार्य के अत्यंत तेजी से औद्योगीकरण करने की रणनीति का शिकार बने। बंगाल सरकार ने इन इलाकों में औद्योगीकरण की खातिर किसानों की हरीभरी बेहद उपजाऊ धरती को कॉर्पोरेट कंपनियों के हवाले करने की ठान ली। नंदीग्राम और सिंगुर क्षेत्र के किसानों ने सरकार के निर्णय का पुरजोर मुखालफत की। किसानों और सरकार के मध्य टकराव बढ़ता चला गया, जिसका फायदा ममता बनर्जी ने उठाया। सीपीएम की औद्योगीकरण नीति का विरोध लैफ्ट फ्रंट सरकार की अन्य पार्टियों ने भी किया, किंतु राजनीतिक ताकत के अहंकार में डूबे सीपीएम नेतृत्व ने किसी की नहीं सुनी।

बंगाल के साथ ही सीपीएम पार्टी के शीर्ष केंद्रीय नेतृत्व में भी परिवर्तन हुआ और कामरेड हरिकिशन सुरजीत के सीपीएम पार्टी के जनरल सैकेट्री का पद का परित्याग करने के बाद प्रकाश कारत ने सीपीएम की कयादत संभाली। प्रकाश कारत से पूर्व सीपीएम के सभी जनरल सैकेट्री हुए नेता जंग ए आजादी के निरअपवाद रुप से प्रखर यौद्धा रहे थे, जिन्होंने अपनी नौजवानी के दिन या तो ब्रिटिश जेलों में व्यतीत किए अथवा लंबी फरारी में। इंग्लैंड की एडिनबर्ग यूनिवर्सिटी से एम.ए. और जेएनयू से पीएचडी करने वाले प्रकाश कारत आपातकाल में भी ना तो जेल गए और ना ही फरार रहे। एक पढ़ाकू कामरेड की छवि रखने वाले प्रकाश कारत राजनीति की कुटिल कूटनीतिक बिसात पर एक कमजोर खिलाड़ी साबित हुए। कारत अमेरिका से न्यूक्लीयर डील के सवाल पर जुलाई 2008 में मनमोहन सरकार से खफा हो गए। कारत और सीपीएम ने न्यूक्लीयर डील के सवाल पर समर्थन वापस लेकर ऐतिहासिक गलती अंजाम दे डाली। जिसका खामियाजा 2009 के लोकसभा चुनाव में लैफ्ट फ्रंट की कयादत करने वाली सीपीएम ने

बाकायदा भुगत लिया, जबकि पार्लियामेंट में सीपीएम और लैफ्ट फ्रंट ताकत 2004 के मुकाबले तकरीबन आधी रह गई।

केरल की ताकतवर सीपीएम के लिए भी कारत की कयादत कहर साबित हो रही है। केरल सीपीएम के प्रांत सैकेट्री विजयन और केरल के चीफ मिनिस्टर अच्चुतानंदन के मध्य जारी राजनीतिक वर्चस्व की जंग में प्रकाश कारत ईमानदार चीफ मिनिस्टर अच्चुतानंदन के खिलाफ सीपीएम के प्रांत सैकेट्री विजयन के साथ दे रहे हैं जिसकी छवि एक भ्रष्ट बेईमान नेता की बन है, जिस पर सीबीआई की अदालत में भ्रष्टता के इल्जाम में मुकदमा दायर है। कुल मिलाकर एक बेहद पढ़ाकू विद्वान और ईमानदार कामरेड प्रकाश कारत के कारनामों ने भारत के तीन प्रांतो में बेहद ताकतवर रही, राष्ट्रीय पार्टी सीपीएम को नेस्तनाबूद कर देने का ऐतिहासिक वैय 2011 के केरल और बंगाल विधानसभा चुनाव में प्राप्त होने वाला है।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार है)

Reproduced by www.hobbyshobby.com with author's permission